अनमोल वचन

राम जी राम राम

पंचामृत

कर कृपा प्रभु दीन दयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।।

राम कृपा नाशहिं सब रोगा ।
जो ऐहिं भाँति बने संयोगा ।।

जां पर कृपा राम की होई ।
तां पर कृपा करे सब कोई ।।

जां पर कृपा दृष्टि अनुकूला ।
ताहिं न व्याप त्रिविध भवशूला ।।

राखा एक हमारा स्वामी ।
सगल घटा का अन्तर्यामी ।।

राम जी राम राम

श्रीराम

राम जी के

अनमोल वचन

.:. .:. .:. .:. .:.

प्रतिदिन इन्हें पढ़िये
और अपने जीवन में
धारण करके सुख
शान्ति का अनुभव
करें ।

राम जी राम राम

श्रीराम · 4.11.06

श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम

श्री राम

सूर्योदय से पहले उठें
नहीं हो, क्षमा मांगो; जिस
दिन न उठे, इसे प्रायश्-
चित करना होगा, उस
दिन खाना पीना बिल्कुल
बन्द होगा।

प्रभात समय उठ कर
अपने मन को समझाना
है। राम जी से इस
प्रकार प्रार्थना करनी
होगी।

श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम

वचन नं० 1

हे राम जी मुझे ठीक मार्ग पर लगाना। गलत रास्ते पर न जाने देना। कृपा रखना। यह आपकी कृपा से ही सम्भव हो सकता है इसलिए हरदम आप की कृपा मांगते है

कर कृपा - - -

श्री राम

वचन नं० 2

हे राम जी यह सारी माया आप की ही है और आपने ही फैलाई हुई है। इस से मुझे बचा कर रखना अहमता ममता न आने देना, यह भी केवल आप की कृपा से ही सम्भव हो सकता है।

श्री राम

श्री राम

वचन नं० 3

हे राम जी, आप सदा मेरे अंग संग हो ऐसा अनुभव करवाते रहना। यह भी आप की कृपा से ही हो सकता है।

हमें सदा आप की कृपा मांगते रहें

तेरी कृपा———

श्री राम

श्रीराम

वचन नं० 4

किरपा करो दीनके दाने, मेरा गुण अवगुण न विचारो कोई
हे दीनों पर दया करने वाले रामजी आप सदा अपनी कृपा रखना, हमारा गुण अवगुण न मन में लाना।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 5

पहले प्रभु को सिमरिये
पीछे करिए काज
काज सवाँरेगे प्रभु
राखोगें तेरी लाज
पहले गुरु मन्त्र का
जाप करके कार्य शुरु
किया जायेगा तो
उस में अवश्य ही
सफलता प्राप्त होगी

श्री राम

ॐ ह्रीं

वचन नं० 6

प्रभात समय सिमरिए

श्री गौरी पुत्र गणेश।

पांच देव रक्षा करें

ब्रह्मा विष्णु महेश।

(1) गौरी जी

(2) गणेश जी

(3) ब्रह्मा जी

(4) विष्णु जी

(5) महेश जी

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 7

आलाधे 36 नाम जाप; निशिवासर आराध, कारा तुम्हें न व्यापहि कारन आवे राम।

अगर हम प्रभात समय 36 बार नाम जाप कर लेते हैं तो सारा दिन कोई विघ्न नहीं लगेगा और कार्य सिद्ध हो जायेगा। श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 8

राम जी की आज्ञा
समय पर आओ जी
समय से जाओ जी
मौन रखना जी
सुखी रहना जी

सत्संग में सदा
समय पर आना चाहिए
और समय पर ही जाना
चाहिए, मौन हो कर
ध्यान से प्रवचन सुनो
चाहिए

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 9

अमृत वेले बोलया
वाहीदा, ताँ घर
सुरगी प्रकार
मेरे नूं फरमाया
होआ नारसी कृपाधार
जो प्रभात समय 36
जाते हैं उन्हीं पर
प्रभु की पूरी कृपा
बरसती है

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 10

खंडा जा के हाथ में, कलगी सोहे शीश, सो हमरी रक्षा करें, कलगीधर जगदीश।

अपने प्रभु को ध्यान कर के रक्षा मांगें भगवान स्वयं ही रक्षा करेंगे

श्रीराम

श्री राम

वचन नं० 11

जे सौ चन्दा उघवांहि
सूरज चढ़े हज़ार
एते चानणा होदआं
गुरु बिन घोर अंधार
जब तक हम गुरु
धारणा नहीं करते
हमारे अन्तरमन में
अन्धकार ही रहता है

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 12

सर्प मे बहुत विष होता
है परन्तु सपेरा मन्त्रो से
वश मे कर लेता है। ठीक
इसी प्रकार हमारे अन्दर
भी विकारो के सिपाई
है इन मन्त्रो के
जाप से मन के वश
कर के सदा के लिए
सुखी हो सकता है

श्रीराम

श्रीराम नवम्बर 13

माया का यह स्वरूप
है कि जितना हम
इस के पीछे भागते हैं
यह और आगे बढ़ती है
जब हम अपना मुख
प्रभु की ओर कर
लेते हैं, तो यह हमारे
पीछे पीछे आती है
परन्तु यह भी प्रभु
कृपा से ही हो सकता
है

श्रीराम

श्री राम

वचन नं० १५

जब हम अपने इष्ट देव
जी की आरती उतारते
है, तो इस मे दीपक आर-
बाती आदि जलते हैं इन
सब की लौ ऊपर को
ही जाती है. ठीक इसी
प्रकार आप कृपा करे
हमारी सारी वृत्तियां
ऊपर की ओर ही रहें।

श्री राम

श्रीराम

वचन नं० 15

जितना हम अपने -
आप को अन्तर्मुख
रखेंगे, उतनियाँ ही
हमारी मानसिक -
शक्तियाँ बढ़ेगी, इस
के लिए भी कृपा -
चाहिए, और कृपा -
श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 16

जब हम मन्दिर -
सत्संग में जाते हैं तो
वहाँ हमें प्रेम आता है
किसी से भी द्वेष नहीं
आता. इसी प्रकार बाहर
आकर भी अगर हम सब
में अपने प्रभु को
विराजित देखेंगे तो
हमें आनन्द आता रहेगा।।

श्रीराम

श्री राम वचन 17

जब हम घड़ी में
सात बजा देखें तो,
हमें मन में विचार
आना चाहिए कि हमें
सदा सत्य बोलना है
जब आठ बजे देखें
तो विचार आना चाहिए
कि हमें आठों पहर
भजन करना है।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 18

पांच शुद्धियां हमारे जीवन में आवश्यक है।

(1) विचार शुद्धि

(2) वस्तु शुद्धि

(3) चित्त शुद्धि

(4) व्यवहार शुद्धि

(5) मन शुद्धि

यह भी पूर्ण प्रभु की कृपा से ही प्राप्त हो सकती है।

श्रीराम

श्री राम

वचन नं० 19

हम अपने प्रभु के आगे
समर्पण कर के ही
विजय प्राप्त कर सकते
हैं। अर्जुन ने श्री
कृष्ण भगवान जी
को पूर्ण समर्पण
कर के ही विजय
प्राप्त कर ली थी

श्री राम

श्रीराम

वचन नं० 26

सदा सुखी रहने के लिए नौ वचन ?

1) संसार को स्वप्नवत समझो।
2) सदा हिम्मत रखो।
3) दुःख में भी आनंद प्रफुल्लित रहो
4) अधिक से अधिक प्रभु सिमर
5) किसी का मन कभी न दुखाओ
6) मन से प्रेम करो।
7) बालवृत का भाव रखो
8) मर्यादा अनुसार चलो
9) हर क्षण प्रभु को प्रणाम करते

श्रीराम

वचन नं० 21

दीये में पानी होगा
तो दीया नहीं जल
सकता। ठीक इसी प्रकार
जब तक हमारे मन में
विषय विकार होंगे
तब तक हमारे अन्दर
ज्ञान का प्रकाश नहीं
हो सकता। इस के
लिए सतगुरु की कृपा
चाहिए। करें कृपा - - -

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 22

खुजली करने वालों को खुजली करने में तो बड़ा आनन्द आता है परन्तु अन्त में जलन होती है, इसी प्रकार विषयों को भोगने में तो बड़ा आनन्द आता है परन्तु अन्त में दुःख होता है। इस के लिए भी कृपा चाहिए। कर कृपा...

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 23

शादी वाली लड़की को
खूब सजाया जाता है
इसी प्रकार आत्मा को
सद्गुणों के गहनों
से सजाया जाये तभी
आत्मा का परमात्मा
से मिलन हो सकता है
हमारे में सारे सद्गुण हों
इस के लिए भी कृपा
चाहिए। कर कृपा ----

श्रीराम

वचन नं० 24

दरवाजा खुला रह जाने
पर मच्छर अन्दर आ
कर दुखी करते हैं।
इसी प्रकार हमारे इन्द्रियों
के दरवाजे खुले रह
जाने पर विकारों विकारो
के मच्छर अन्दर आ
कर दुखी करते हैं
इन्द्रिय संयम के लिए
भी सतगुरु की कृपा चाहिए
करें कृपा .... श्री राम

श्रीराम

वचन नं० 25

छोटा बच्चा ताली बजाता है तो उसे देख कर हम खुश होते हैं। इसी प्रकार जब हम तालियां बजा कर कीर्तन करते हैं तो भगवान प्रसन्न होते हैं और तालियां बजाने से पाप भी सारे झड़ जाते हैं।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 26

शहद की मक्खी शहद
लाती है और खाव कर
उड़ जाती है। गुड़ की
मक्खी गुड़ से चिपक
जाती है और दुखी
होती है। ऐसे शहद
की मक्खी बनना है
यह भी पूर्ण प्रभु की
कृपा से ही हो सकता है
कर कृपा -- -- -- --

श्रीराम

श्रीराम

वचन न० 27

पांच साधुगुण याद राखो; और इन्हें अपनाओ ?

1) सिमरण - हर समय गुरु मन्त्र का जाप करते रहो।

2) सेवा - प्रत्येक कार्य प्रभु की सेवा समझ कर करो।

3) संयम - कर्म इन्द्रियां ज्ञान इन्द्रियों पर कन्ट्रोल रखो।

4) सादगी - खाने में पहरावे में सादापन राखो।

5) सतसंग - संतो का संग अवश्य करो।

श्रीराम

वचन नं० 28

जब मन में शुभ कर्म का भाव आये तो जल्दी से कर देना चाहिए। जब अशुभ कर्म का भाव आने लगे तो भगवान का ध्यान करके गुरु मन्त्र का जाप करके उसे स्थगित कर देना चाहिए, तभी कल्याण होगा।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 29

जैसा व्यवहार आप दूसरों से चाहते हैं, वैसा पहले आप दूसरों से करें।

अगर आप चाहते हैं कि सब आप से मीठा बोलें पहले आप सब से मीठी वाणी बोलें।

कागा काको धन हरे
कोयल काको देत
तुलसी मीठे वचन से
जग अपनो कर लेत।

श्रीराम

बचन नं० 30

एक बूँद पहाड़ पर पानी की पड़ने से पहाड़ पर कोई प्रभाव नहीं होता इसी प्रकार संतो को कुछ भी कहने से उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

बूंद अघात सहें गिरि जैसे
खल के बचन संत सहे जैसे।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 31

जैसे बूंद ऊपर से साफ
आती है परन्तु नीचे मिट्टि
मे गिर कर गन्दी हो
जाती है। इसी प्रकार जीव
भी जीव जब आता है तो
निर्मल होता है परन्तु
माया मे आने से गन्दा
हो जाता है। यह माया
केवल प्रभु कृपा से ही
दूर हो सकती है।
करे कृपा .....

श्री राम

वचन नं० 32

एक छोटा सा ढक्कन नीचे गिर गया उसे उठाने के लिए हमें नीचे पृथ्वी पर लेट कर मेज के अन्दर से निकालना पड़ा। इतनी छोटी सी चीज़ के लिए इतना झुकना पड़ा। तो उस ब्रह्माण्डनायक ईश्वर को प्राप्त करने के लिए कितना झुकना पड़ेगा।

दासनदासनन्ता हूँ। श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 33

हम संसार में तन मन धन से संसारियों की सेवा करते हैं तप करते हैं तो इस का फल ज़्यादा चिन्ताएं बिमारी मिलता है और यही तप भगवान के लिए किया जावे तो आनन्द परमानन्द शान्ति प्राप्त हो जाती, यह भी तो प्रभु की कृपा से हो सकता है।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं०३५

मनुष्यों से पशु अच्छे हैं

वह बच्चा जरा बड़ा होने

पर उसे छोड़ देते हैं।

परन्तु मनुष्य की आसक्ति

तो बढ़ती ही जाती है।

यह भी प्रभु कृपा से

ही ठीक हो सकती है

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।

तेरी ओर मुड़ूँ गोपाला।

जाप करो।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 35

चार अति आवश्यक बातें सदा याद रखें और दोहराते रहें

1) हे मन! जो प्रभु ने दिया है उसे प्रसन्न मन से स्वीकार कर

2) हे मन! ईश्वर को हर समय हाजिर नाजिर देख

3) हे मन बुरे कर्मों से सदा बचता रह।

4) जिसका दिया हुआ अन्न खाता है उसकी चाकरी अवश्य कर वरना अन्न मत खा

श्रीराम

वचन नं 36

भगवान कहते हैं अगर
तुम मुझे प्रसन्न करना-
चाहते हो तो मुझे वह
वस्तु भेंट करो, जो मुझे
अच्छी लगती है। वह
है नम्रता दीनता।
यह भी कृपा से ही
प्राप्त हो सकती है
सर कृपा - - - -

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 37

जिन में यह तीन गुण
है, वह भगवान को अति
प्यारे लगते हैं।
सेवा, दया और उदारता
यह सद्गुण भी पूरी
प्रभु की कृपा से ही
प्राप्त होते हैं।

कर कृपा - - -

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 38

जो लोग बहुत खाते है
उनमें चार दोष आ जाते है

1) भजन में रस नहीं आता
2) तन्दरुस्ती में गिरावट आ जाती है।
3) गुरु की सेवा ठीक प्रकार नहीं होती आलस्य आ जाता है
4) मन प्रबल हो जाता है भजन में नहीं लगता

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 39

किसी भी चीज़ को बनाने के लिए उसे ठीक करने के लिए पहले उसे तोड़ना पड़ता है ठीक इसी प्रकार इस मन को परमात्मा में लगाने के लिए मनुष्य के द्वारा इसे जगजाल से छोड़ अवश्य लगाना चाहिए। जिस अभ्यास धारण करना चाहिए।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 50

संसार मे रहना, मगर संसार मे न होना यह है साक्षी भाव। कमल के समान रहना। मायायुक्त न हो यह भी केवल सतगुरु की कृपा से ही सम्भव हो सकता है। कर कृपा-

श्रीराम

श्रीराम वचनामृ ५।

सुरति को शब्द के साथ जोड़ना ही परमात्मा है। मन को कन्ट्रोल कर के इन्द्रियों पर संयम रख कर ध्यान मे बैठना, गुरु मन्त्र का जाप करना, इसी प्रकार प्रभु से मिलन हो सकता है। सतगुरु की कृपा अवश्य - चाहिए।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 112

अपने प्रभु मे पूर्ण
विश्वास ही प्रेमियों
का एक लक्षण है।
बिन विश्वास भक्ति नही
तेही बिन द्रवहिं न राम
राम कृपा बिनु सपनेहु
जीव न ले विश्राम
विश्वास + कृपा = मिलन
कृपा मांगो विश्वास रखो
प्रभु प्राप्ति अवश्य होगी

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० ५३

मुझे कुछ नहीं चाहिए,
यह वास्तविक तप है
संसार में मेरा कुछ नहीं
है, यही ज्ञान है। केवल
प्रभु ही मेरे अपने हैं
यही वास्तविक भक्ति है
ऐसा निरन्तर भाव बना
रहे। यही परमात्मा से
कृपा चाहिए,

कर कृपा ---

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० ५५

वास्तविक साधक वही
है, जो सदा अपनी ओर
निहारता है। प्रत्येक
साधक अपना निर्माण
करे यही पुरुषार्थ है।
बुरा जो देखन मैं चला
बुरा न दीखा कोय
जो घट देखा अपना
मुझ से बुरा न कोय
श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 45

हम ऊपर से तो मौन रख लेते है. परन्तु अन्तरमन में संकल्प विकल्प आते रहते हैं। यह मौन नहीं है। मन बिलकुल शान्त रहे केवल अपने इष्टदेव को मन मे धारण कर के पूर्णतया उन्ही की ओर रहे, यही मौन है

श्रीराम

श्रीराम

वचन न० 46

जो खुद से जुड़ा है वह खुदा से जुड़ा है। जिस को अन्दर का दीया जगा गया है वही देवता है। अन्दर का दीपक जगाने के लिए बाहर के नेत्र बन्द कर के प्रभु की ओर लगाने हैं

श्रीराम

श्रीराम

दिसं० सन० 57

सारी ज्ञान इन्द्रियां कर्म इन्द्रियां, मन बुद्धि चित्त, सब को भगवान की ओर रखो। सदा आनन्दित रहो। यह भी केवल पूर्ण प्रभु की कृपा से ही सम्भव हो सकता है पर कृपा - - - -

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 58

जिन पर प्रभु की
पूरी कृपा होती है
वह दे कर आनन्दित
होते हैं ले कर नहीं
हमें दे कर प्रसन्न
होना चाहिए ले कर
नहीं ।

वह दाता एक है
दूसर नाही कोय

श्रीराम

श्रीराम

वचनामृत

हर पल हर श्वास जो
गुरु मन्त्र को याद
करता है। वो ही हर
पल प्रभु को अंग
संग अनुभव करता है
इसलिए हमें हर समय
प्रभु सिमरण में ही
रहना चाहिए कल्याण
हो जायेगा।

श्रीराम

श्री राम

वचन नं० 50

दुनिया मे सारी दुखो
को दूर करने का
उपाय मंत्र जाप है
जो सतगुरु के द्वारा
दिया गया हो।
सारी दुख दूर हुए
जब तेरा नाम लिया

श्री राम

श्रीराम

वचन न० 54

सब कुछ प्रभु के हाथ
में है, केवल वही
स्वीकार करता है
जिस पर प्रभु स्वयं
कृपा करते हैं।

करु कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर दृष्टि गोपाला

परमात्मा

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 52

मन के मैल धुलेंगे।
नाम से, सुधारो,
शुभ संकल्प से
गंगा स्नान से नहीं
जे मन होवे चंगा
मेरी कठौते विच
गंगा

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 53

पंडित सो, जो मन परबोधे
राम नाम अंतर में सोधे।
जो मन द्वारा हर समय
ब्रह्म का विचार करता
है। वह ब्रह्मण है।
जो प्राणी निशदिन भजे
रूप राम तंहें जान
हरिजन हरि अंतर नहीं
नानक साची मान

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 54

भगवान प्यारे लगें
उन की याद बनी रहे
यही भक्ति है।
मिल मेरे प्रीतम जीओ
तुध बिन खरी निमाणी
भावे अन्न न पानी
मिल मेरे प्रीतम जीओ"
ऐसी अवस्था भी पूरी
भगवान की कृपा से
ही प्राप्त होती है

जय कृपा ---- श्रीराम

श्रीराम

वचन न० 55

नाशवान वस्तुओं के
प्रति प्रेम न होना
यही साधन है।
यह केवल नित्य प्रति
के सतसंग करने से
ही प्राप्त हो सकता है
और सतसंग भी केवल
प्रभु की कृपा से ही
मिलता है।

करे कृपा — ... —

श्रीराम

श्रीराम

वचनामृत 56

भगवान जी को
सब कुछ पूर्णतया
समर्पित कर देना
ही प्रेम है।

जिन प्रेम किओ
तिन ही प्रभु पाइओ

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं॰ 57

आनन्द सदा हमारे अन्दर है। जिसे हम बाहर ढूंढते हैं। यह भी केवल उन्हीं को प्राप्त होता है, जिन पर पूर्ण प्रभु कृपा होती है।

सब किछ घर मे बाहर नाही
बाहर ढूंढे सो भरम भुलाहि

श्रीराम

श्रीराम

वचन न० 58

मौन साधना की पहली
सीढ़ी है। बोलने की
कला, उस व्यक्ति ने
सीखली है जो कम
बोलता है

कृपा करे रामजी
सभी मह सामानं है
श्रीराम

श्रीराम

वचन नं 059

आगे पीछे का चिन्तन न करना, एक समय में एक ही कार्य पूरी एकाग्रता से करना यही तप है

कृपा करो रामजी

श्रीराम

श्रीराम

वचन न० 60

भगवान जी ने कान दो दिये है और जीह्वा एक दी है। इस का तात्पर्य यही है कि सुनो अधिक और बोलो कम।

श्रीराम

श्रीराम

वचन न० 61

भविष्य मे भूल नै न करने का निश्चय ही व्रत है।

"पिछले अनगरागको लो

आगे मार्ग पावहु"

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 62

ईश्वर की कृपा का
सहारा ही परम बल है
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
सुखसागर मेरे गुरु गोपाला
जब दया दृष्टि हो जाती
है, सूखी खेती
हरियाती है।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 63

जिसने अपने जीवन
को साध लिया
वही साधू है
कृपा करो रामजी
श्रीराम

ਸ਼੍ਰੀਰਾਮ

ਵਚਨ ਨੰ०64

ਵਿਰਾਟ ਸੇ ਏਕਾਕਾਰ
ਹੋ ਜਾਨਾ ਹੀ ਧ੍ਯਾਨ ਹੈ
ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੋ ਰਾਮਜੀ

ਸ਼੍ਰੀਰਾਮ

श्रीराम

वचन नं० 65

सेवा में ऐसी दिव्य शक्ति है, जो सब का मन हर लेती है। परन्तु याद रखो कि सेवा निष्काम होनी चाहिए।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 16

रोटी रोटी कहने से
ही भूख नहीं मिटती
पानी पानी कहने
से ही प्यास नहीं
बुझती इसी प्रकार
कथनी से ही अपने
लक्ष्य को प्राप्त नहीं
कर सकते।

कृपा करो राम जी

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं. 67

परमार्थी जीवों की होशियारी, संसारी लोगो की संगति से बचाये रखने में है।

कृपा करो राम जी।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं. 68

वास्तविक साधु की
योग्यता अपने आप
को भूल जाने में और
मालिक को हर समय
याद रखने में है

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 69

सद्गुरु ही भगवान को मिलने का साधन हैं जो बड़े भाग्य से प्राप्त होते हैं।

कृपा करो, रामजी

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 10

यह सारा संसार भगवान का मन्दिर है प्रभु समताइसके अन्दर हूँ।

मुझ को भी ऐसी आँख दो कि कण२ मे मैं आप को देख सकूँ।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० ७१

जिस प्रकार धरती समतल होने पर गाड़ी ठीक से चलती है। इसी प्रकार हमारा मन समतल होने पर नाम ध्यान ठीक ठीक लगेगा

हुजूर कंवर साहब जी

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 78

दया का उदय - याद होता है, जब हम भगवान को हर समय याद करेंगे तो दया स्वयं ही हो जायेगी।

कृपा करो मेरे रामजी।

श्रीराम

वचन नं० 73

रत को उलटा लटकें
जब हम भगवान के
नाम में झुलायेंगे
रत जायेंगे, तभी हम
तर जायेंगे

कृपा करो मेरे स्वामी

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 74

जब हम दोनों हाथ ऊपर उठा कर आदि राम जी को राम राम करते हैं तो हम उनसे प्राथना करते हैं। हम कमल की तरह खिलना। दूसरा हम समर्पण करते हैं। तीसरा हमारी व्यक्तित्व को संसार से ऊपर रखना।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 75

जिस प्रकार आया रख कर भी माता पिता अपने बच्चे का पूरा ध्यान रखते हैं इसी प्रकार भगवान माया की आया रख कर भी हमारा पूरा२ ध्यान रखते हैं।
कृपा करो मेरे रामजी

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 76

प्रभु हमारे में रहते हैं, जैसे फूल में सुगन्धि, दूध में घी, लकड़ी में आग। परन्तु खूब परिश्रम करना पड़ता है। यह भी प्रभु आप करवाते हैं

श्रीराम

श्री राम

वचन नं० 77

कोई हमारी निन्दा करे तो हमें बुरा नहीं मानना चाहिए क्योंकि वह हमारी मैल को जीह्वा के द्वारा धोता है। निंदक हमरे कपड़े धोवे।

श्री राम

श्रीराम

वचन नं 78

जब हमें बिमारी या दुख आता है तो हमें दुखी नही होना चाहिए क्योंकि भगवान हमारी बिमारी व दुख से ही हमारे पाप काटते है ।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 79

हाथ के आगे वाले भाग में लक्ष्मी का, मध्य में सरस्वती का, और मूल में भगवान विष्णु का निवास है इस लिए प्रभात समय पहले उठ कर दोनों हाथों का दर्शन करना चाहिए

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 80

मन में सदा नाम
की सिंचाई करने से
हमारे अन्दर सदा
शीतलता रहेगी।

कृपा करो मेरे राम
जी

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 81

संसार एक कुएं की
तरह है जैसी आवाज़
हम इस में मारेंगे वैसी
ही वापिस आ जायेगी
इसलिए हमें सोच
कर बोलना चाहिए
और सदा मीठा बोलना
चाहिए।

श्रीराम

श्री राम

वचन नं० 92

एक घुड़सवार अपने घोड़े को पानी पिलाने ले कर रहट पर गया और बोला भय्या जरा रहट बन्द कर दो कि यह घोड़ा पानी पी ले, वह बोला अगर रहट बन्द हो जायेगा तो पानी भी नहीं आयेगा। इसलिए संसार में सारे कर्म करते हुए भक्ति जारी रहें।

श्री राम

वचन नं० ४२

एक घुड़सवार अपने घोड़े को पानी पिलाने के लिए रहट पर गया और बोला भय्या जरा रहट बन्द कर दो कि यह घोड़ा पानी पी ले, वह बोला अगर रहट बन्द हो जायेगा तो पानी भी नहीं आयेगा। इसलिए संसार में रहते कर्म करते हुए भक्ति जारी रखें।

श्रीराम

प्रवचन नं. ३५

तीन बातों के लिए
भगवान से कृपा याचना
करो ?

कृपा मांगो कि तुम्हारे
से कोई पाप न हो।

2 सदा दैवी सम्पत्ति रहे

3 भगवन्नाम का नियमित, जप चलता रहे

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं. 85

भजन के लिए कुछ भी त्याग करने की आवश्यकता नहीं है बस हर एक कार्य प्रभु की सेवा समझ कर करना है।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 86

जिस जीव में यह तीन बातें होंगी?

1 सन्तोष

2) प्रभु का डर

3) दर्शन की बिरह

उस को उद्धार अवश्य ही होगा।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 87

चोरहिं चान्दनी रात न भावा।

जहाँ अन्धेरा होता है, वहीं चोर लूटते हैं इसी प्रकार जहाँ अज्ञानता का अंधेरा होगा, वहीं हमारे विकार हमें लूट लेंगे। कृपा मांगो अज्ञानता नष्ट कर कृपा - . . .

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० ४४

गुरुमुख भगवान ध्यान करता है और भगवान के लिए रोता है।
मनमुख भगवान को नहीं मानता और संसार के लिए दुःखी होकर रोता है। हे प्रभु हमें गुरुमुख बनाना

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 89

सदा हमारा लक्ष्य
प्रभु भक्ति ही होना
चाहिए। लक्ष्यहीन
जीवन निरर्थक है

श्रीराम

श्रीराम

वचन न० 96

रोम रोम मे सदा
वाह वाह करो यह
भी होगा जब हमारे
रोम रोम मे भगवत्
नाम का चिन्तन
होगा यह भी पूरी
प्रभु की कृपा से ही
हो सकता है।

और कृपा ---

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 91

गुरु सन्त बाहर से दरवाजे पर मिलने से जाते समय भी भगवान का नाम याद रहेगा, भगवान रक्षा करेंगे। आते समय भी भगवान याद रहेंगे। सदा सिमरण होता रहेगा।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 91

गुरु सन्त बाहर से
दरवाजे पर मिलने
से जाते समय भी
भगवान का नाम
याद रहेगा, भगवान
रक्षा करेंगे। आते
समय भी भगवान
याद रहे। सदा
सिमरण होता रहेगा।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० १२

संसार में आये हैं तो कर्म करना ही होगा।। परन्तु अगर कर्म करते हुए गुरुमन्त्र का जाप साथ२ चलता रहेगा।। तो जीवन आनन्द पूर्ण रहेगा।।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 13

जैसे लोभी का मन सौ झूठे धन में रहता है इसी प्रकार भक्त का मन सदा सच्चे धन में भगवान के नाम में रहता है। भक्त सदा सुखी रहता है

श्रीराम

लोभहिं प्रियजिमि दाम

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० ९५

हमें कभी भी अपनी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए। आत्म प्रशंसा ओछापन है।

कहे नानक मन तेरी वडिआई कोई नाम न जाने मेरा।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 95

शान्ति और सुख केवल
सतसंग का प्रभाव है
परन्तु सतसंग भी
पूर्ण कृपा से ही
मिलता है।

बिनु सतसंग विवेक न
होई
राम कृपा बिनु सुलभ न
सोई

श्रीराम

श्री राम

वचन नं० 96

दूसरों के अवगुणों
को देखने से पहले
अपने अवगुण देखो
सब अवगुण मैं भरा
नही कोई
खोजे कर करे निकाले
होई

श्रीराम

श्री राम

वचन नं० 97

पूरा सतगुरु सत-
संग में बैठ छिड़क
देते है जिससे हमारा
जीवन सुगन्धित पूरा
हो जाता है। इस
लिए नित्य प्रति का
सतसंग मिलना
आवश्यक था केवल
प्रभु की कृपा से
ही मिलता है।

कर कृपा......

श्रीराम

अधनं० 98

गुरु जी को मुस्कराते देखकर मैं बेहोश हो गया जब होश आया तो गुरु जी फिर मुस्करा दिये हमें सदैव मुस्कराते रहना चाहिए।

श्रीराम

श्रीराम वचन 99

सद्गुरु मां के प्यार
से कई हजार बार
प्रेम करने योग्य हैं
क्योंकि वह हमारी
आत्मा को भोजन
प्रदान करते हैं।
श्रीराम।

श्रीराम

वचन नं० 100.

भगवान से भगवान
जी को ही मांग लो
भगवान जी से ऐसा
मांगो कि फिर और
कुछ मांगना ही न
पड़े।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 101

पूरी प्रभु के कृपा से हमारे कई जन्मों के नष्ट कर जाते हैं इस लिए नित्य प्रभु कृपा की याचना करते रहो।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 102

अपना ज्यादा से ज्यादा समय प्रभु सिमरण में बिताओ अपने आप ही तुम्हारा जीवन आनन्दित रहेगा।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 103

पूर्ण समर्पण / सफलता, की सीढ़ी है बिलकुल अहंकार न आये यह भी केवल पूर्ण प्रभु की कृपा से ही सम्भव हो सकता है।

श्रीराम

कर कृपा - - - -

श्रीराम

वचन न० 104

नमस्कार मे चमत्कार है। गीता के ग्यारहवे अध्याय मे अर्जुन ने भगवान को बार 2 नमस्कार किया। हे देव देव प्रणाम हे देव प्रणाम बारम्बार है। फिर 2 प्रणाम प्रणाम नाथ प्रणाम अनेको बार है।

श्रीराम

ॐ श्रीराम

वचन सं0 105

चाह गई, चिन्ता।
मिटी मनुआ बेपरवाह
जिनको कछु न
चाहिए वह ही शाहनशाह
यह केवल प्रभु
की कृपा से ही हो
सकता है।

श्रीराम

नर कुमार . . . .

॥ श्रीराम ॥

वचन नं० 105

चाह गई, चिन्ता मिटी मनुआ बेपरवाह।
जिसको कछु न चाहिए वह ही शहनशाह।
यह केवल प्रभु की कृपा से ही हो सकता है।

श्रीराम

दर कृपा . . . .

श्रीराम

वचन नं० 106

कामना सहित काम = सफलता ।

जब हम कर्म करते रहें और कुछ कामना कोई न करें तभी हमें सफलता प्राप्त हो सकती है ।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 107

मेरे पास कोई भी परेशानी नहीं। क्योंकि मेरे पास सद्गुरु है सद्गुरु हमारी सारी कामनाएँ साकार कर देते हैं।

श्रीराम

श्रीराम

वचन नं० 108

जैसे यह एक एक पृष्ठ लिखते 2 और समाप्त हो गये हैं। ऐसे ही हमारे जीवन की किताब का एक एक पृष्ठ पलटता 2 हमारा जीवन समाप्त हो रहा है। हमें साव-धान रहना चाहिए।

श्रीराम

श्रीराम

इन 108 वचनों की
माला में इतनी शक्ति
जो नित्य पाठ करेगा
आनन्द मग्न रहेगा।
प्रतिदिन माला
करें और जीवन में
आनन्द लो।

राम जी राम राम
श्रीराम
5.12.06
3 P.M.

कर कृपा प्रभु दीन दयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।।

कर कृपा प्रभु दीन दयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।।

Printed by : Print Center, 25520238, 25525646,9810963012